TEACHERS OF BIHAR

The Change Makers

पद्यपंकज

बिहार के शिक्षकों द्वारा रचित

जुलाई 2025

अंक 11

गुरु पूर्णिमा विशेषांक

Reg. No. BR/2025/0487469

ई-पत्रिका तक पहुँचने के लिए क्यू आर कोड को स्कैन करें

मासिक कविता संग्रह

teachersofbihar.padyapankaj.org

पद्यपंकज – गुरुपूर्णिमा विशेषांक

गुरु केवल एक व्यक्ति नहीं, बल्कि वह दिव्य शक्ति हैं, जो अज्ञान के अंधकार में प्रकाश बनकर हमारा मार्गदर्शन करते हैं। भारतीय संस्कृति में गुरु को ब्रह्मा, विष्णु और महेश के समकक्ष स्थान दिया गया है, क्योंकि वे ही सृजन, पालन और संहार – तीनों की भूमिका निभाते हैं। ज्ञान का सृजन, संस्कारों का पालन और अज्ञान का संहार – यही गुरु का जीवन-धर्म है। गुरु पूर्णिमा का यह पावन पर्व हमें स्मरण कराता है कि जीवन में जो भी उपलब्धियां हैं, उनके मूल में गुरु का ही आशीर्वाद और मार्गदर्शन है।

Teachers of Bihar परिवार इस पावन अवसर पर अत्यंत हर्ष के साथ पद्यपंकज का 'गुरुपूर्णिमा विशेषांक' आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहा है। इस अंक में संकलित कविताएँ, लेख और भावनाएँ न केवल गुरु-शिष्य परंपरा के गौरवशाली इतिहास को शब्द देती हैं, बल्कि आज के समय में भी गुरु की प्रासंगिकता को उजागर करती हैं। इसमें हर पंक्ति में कृतज्ञता, हर शब्द में श्रद्धा और हर भाव में प्रेरणा का संचार है।

इस विशेषांक की तैयारी में हमारी पूरी टीम ने पूरे मनोयोग से कार्य किया है, ताकि यह पत्रिका गुरुजनों के प्रति हमारी सामूहिक श्रद्धांजलि बन सके। हम सभी रचनाकारों का आभार व्यक्त करते हैं, जिन्होंने अपने शब्दों से इस अंक को अनमोल बनाया, और पाठकों का भी धन्यवाद करते हैं, जिनकी सहभागिता हमें निरंतर आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है।

Teachers of Bihar की ओर से आप सभी को गुरुपूर्णिमा की हार्दिक शुभकामनाएँ। हमें विश्वास है कि पद्यपंकज – गुरुपूर्णिमा विशेषांक आपके हृदय को स्पर्श करेगा, आपके विचारों को ऊँचाई देगा और गुरु के प्रति आपके सम्मान को और भी दृढ़ बनाएगा।

धन्यवाद सहित
Teachers Of Bihar

शुभकामना संदेश

"पद्यपंकज" जैसी पत्रिका शिक्षकों की उस रचनात्मकता और सोच को सामने लाती है, जो अक्सर उनके पाठ्यक्रम और जिम्मेदारियों के बीच छिपी रह जाती है। यह जानकर बहुत खुशी हुई कि हमारे शिक्षकगण, अपनी व्यस्त दिनचर्या के बीच भी साहित्य और लेखन के प्रति इतनी संवेदनशीलता और समर्पण दिखा रहे हैं।

यह पत्रिका सिर्फ शब्दों का संग्रह नहीं है, बल्कि यह एक जीवंत दस्तावेज़ है—जो शिक्षा, विचार और भावनाओं के मेल से बना है। इसमें छपी हर रचना, एक शिक्षक के अनुभव, उसकी सोच और समाज के प्रति उसकी जिम्मेदारी को दर्शाती है।

"पद्यपंकज" की पूरी टीम, संपादक मंडल और इसमें सहयोग देने वाले सभी शिक्षकों को मेरी ढेरों शुभकामनाएँ। उम्मीद करती हूँ कि यह प्रयास यूँ ही आगे बढ़ता रहे और नई पीढ़ी को एक जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए प्रेरित करता रहे।

13/04/25

डॉ रश्मि प्रभा
संयुक्त निदेशक
राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद, बिहार

शुभकामना संदेश

"पद्यपंकज" जैसी रचनात्मक पहल यह सिद्ध करती है कि शिक्षक न केवल ज्ञान के दीप प्रज्वलित करते हैं, बल्कि समाज की सांस्कृतिक चेतना को भी जीवंत बनाए रखते हैं। यह पत्रिका उन भावनाओं, विचारों और अनुभूतियों की अभिव्यक्ति है, जो शिक्षकों के हृदय में पलती हैं और साहित्य के रूप में साकार होती हैं।

ऐसी पत्रिकाएँ शिक्षा को केवल पुस्तकों की परिधि में नहीं बाँधतीं, बल्कि सोच, अभिव्यक्ति और संवेदना को विस्तार देती हैं। यह प्रशंसनीय है कि हमारे शिक्षक अपनी व्यस्त दिनचर्या के साथ-साथ सृजनात्मक साहित्य के माध्यम से समाज को दिशा देने का कार्य कर रहे हैं।

मैं "पद्यपंकज" पत्रिका से जुड़े सभी शिक्षकों, संपादक मंडल और रचनाकारों को इस पुनीत कार्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ। यह पत्रिका निरंतर पल्लवित और पुष्पित होती रहे, यही मेरी कामना है।

डॉ स्नेहाशीष दास

विभागाध्यक्ष,

विद्यालयी शिक्षा विभाग

राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद, बिहार

सम्पादकीय

हमारे जीवन में गुरु का अहम् स्थान है। इनके बिना जीवन का कोई महत्त्व नहीं रह जाता है। सूनापन और सारहीन प्रतीत होता है। गुरु शब्द दो अक्षरों के योग से बना है। 'गु' का अर्थ है अँधेरा और 'रु' का अर्थ है उस अंधकार को दूर करने वाला। अर्थात् अज्ञान रूपी अंधकार से रूबरू होने की जो शक्ति प्रदान करता है, अंधकार को प्रकाश में बदलने का जो ज्ञान देता है वही गुरु है। कहने का तात्पर्य है कि अंधेरे का वजूद तब तक ही है, जब तक सद्ज्ञान का सवेरा न हो। जैसे हरी-हरी घास पर अथवा वृक्षों के पत्तों पर पड़ी ओस की बूँदें सूर्य की किरणों के आते ही विलीन हो जाती हैं ठीक उसी प्रकार जब गुरु के ज्ञान रूपी सूर्य की किरणें शिष्य के अंत:करण पर पड़ती हैं तो विकार, वासना और अज्ञान का अंधेरा स्वयं भाग जाता है। वाकई हमें गुरु के बताए मार्ग पर चलना चाहिए। जो शिष्यगण ऐसा भाव अंतर्मन में रखते हैं, उन्हें आगे बढ़ने से कोई रोक नहीं सकता है। सच में, हमें मन से स्वीकार करना पड़ेगा कि

गुरु चरणों में है जिसे, श्रद्धायुत विश्वास।
जीवन में पाता वही, सन्मति बुद्धि विकास।।

अंत में गुरु पूर्णिमा का यह विशेषांक आपको एक नई साकारात्मक ऊर्जा से सराबोर कर देगा लेकिन यह तभी संभव है जब आप इस पत्रिका को मन के झरोखे से देखेंगे और अपनी साकारात्मक प्रतिक्रिया देकर अपनी लेखनी से पत्रिका में नया रंग भरते रहेंगे। आप चुपचाप नहीं बैठेंगे बल्कि अवश्य ही बताएँगे कि यह पत्रिका आपको कैसी लगी? आपका समग्र प्रयास ही तो विकास का नव सोपान बनेगा। तो क्यों न हम अभी से एक-एक ईंट जोड़कर उच्च मुकाम तक पहुँचने की कोशिश करें। साथ ही इसकी बगिया को अच्छी तरह सींचकर, पुष्पित व पल्लवित कर सुरभित करते रहें। इस हेतु संकल्प, लगन, परिश्रम और दृढ़ इच्छाशक्ति की जरूरत है।

देवकांत मिश्र 'दिव्य'
मध्य विद्यालय धवलपुरा,
सुलतानगंज, भागलपुर

पद्यपंकज काव्य संग्रह

- पद्यपंकज मासिक पत्रिका जिसे टीचर्स ऑफ़ बिहार के तरफ़ से प्रकाशित किया जा रहा है। इस प्रकाशन में बिहार के शिक्षकों द्वारा स्वरचित कवितायें प्रकाशित हैं।
- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक का विक्रय नहीं किया जा सकता है। यह केवल पढ़ने के उद्देश्य से नि:शुल्क उपलब्ध है।
- यह कविता 'Teachers of Bihar' की संपत्ति है। इसे किसी भी प्रकाशक या अन्य लेखक द्वारा उपयोग नहीं किया जा सकता है।
- पत्रिका के सभी लेख, चित्र और सामग्री के अधिकार लेखक और प्रकाशक के पास सुरक्षित हैं।
- पत्रिका के किसी भाग को बिना पूर्व अनुमति के पुनः प्रकाशित या वितरित नहीं किया जा सकता है।

प्रकाशन सहयोग

प्रधान संपादक

देव कांत मिश्रा

मध्य विद्यालय धवलपुरा, सुलतानगंज, भागलपुर

संपादक एवं डिजाइन

अनुपमा प्रियदर्शिनी

रा० उ० मध्य विद्यालय, दूधहन, रघुनाथपर, सिवान

सह - संपादक

राम किशोर पाठक

प्रधान शिक्षक, प्राथमिक विद्यालय कालीगंज उत्तर टोला, बिहटा

तकनीकी सहयोग

ई ० शिवेंद्र प्रकाश सुमन

नेतृत्वकर्ता

शिव कुमार

उत्क्रमित मध्य विद्यालय नारायणपुर, बिक्रम, पटना

अनुक्रमणिका

रचना	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
1. साक्षात भगवान	जैनेंद्र प्रसाद रवि	8
2. आएँ गुरु से तिलक लगा लें	रामपाल प्रसाद सिंह 'अनजान'	9
3. शिक्षा की ज्योति	ब्यूटी कुमारी	10
4. अपना हमें समर्पण दे दो	राम किशोर पाठक	11
5. गुरुजन	राघव दूबे	12
6. हे गुरु	डॉ. स्नेहलता द्विवेदी आर्या	13
7. जगत में गुरु से न कोई महान	अमरनाथ त्रिवेदी	14
8. गुरु का गौरव	सुरेश कुमार गौरव	16
9. गुरुवार वाले प्रेम से	राम किशोर पाठक	17
10. गुरु	रुचिका	18
11. वंदन गुरु का करते सारे	राम किशोर पाठक	19
12. गुरु पूर्णिमा	मनु कुमारी	20
13. गुरु का सानिध्य	एस. के. पूनम	21
14. गुरु पूर्णिमा	देवकांत मिश्र 'दिव्य'	22
15. गुरु पूर्णिमा	नीतू रानी	23
16. हे गुरुदेव	संजय कुमार	24
17. गुरु की महिमा	जैनेंद्र प्रसाद रवि	26
18. गुरु महिमा	मनु कुमारी	27
19. गुरु माना है हम आपको	अभिनव कुमार	28
20. गुरु वंदन	स्वाति सौरव	29
21. गुरूवर तुझे नमन	लवली वर्मा	31
22. जगत में गुरु कहलाता है	एम. एस. हुसैन	32
		33

साक्षात भगवान

करते हम गुरु वंदना, धर चरणों का ध्यान,
जिनकी कृपा कटाक्ष से, मिटे सकल अज्ञान।
गुरु कृपा से सर्वसुलभ, ज्यों करते गुणगान।
शरणागत हो जाते हीं, तजकर निज अभिमान।
मित्र-भाई से बढ़कर हैं, माता-पिता समान,
इस अखिल ब्रह्माण्ड में, साक्षात् भगवान।
गुरु बड़े हैं हितकारी, मानता सकल जहान।
धर्मशास्त्र और वेदों में, हैं अनेकानेक प्रमाण।

जैनेन्द्र प्रसाद 'रवि'

आएँ गुरु से तिलक लगा लें

आऍं गुरु से तिलक लगा लें,
काली छाया दूर भगा लें,
बीत गई गर्मी की छुट्टी,पाबस आया खास महीना।
ऐसा प्रेमिल भाव कहीं ना।।
लिए हाथ में स्वागत थाली,
राह जोहते शिक्षक मेरे,
सोए भाग्य खुलेंगे मेरे,
भागेंगे घनघोर अँधेरे,
जीवन सफल बनाने मेरे,बहा रहे हैं खूब पसीना।
ऐसा प्रेमिल भाव कहीं ना।।
सीता आई गीता आई,
सोनू मोनू दौड़ लगाए,
पहले-पहले के चक्कर में,
गिरते-पड़ते लाँघन आए,
स्नेह-सिंधु उमड़ रहे हैं,रहकर दूर नहीं अब जीना।
ऐसा प्रेमिल भाव कहीं ना।।
शाखों पर बैठे पक्षी सह,
बादल चहक रहे हैं नभ में,
दृश्य अजूबा खड़ा धरा पर,
है संजोग स्वर्ग दुर्लभ में?,
गिलहरियाँ भी नाच रही हैं,नाच रही हैं स्वर्ग हसीना।
ऐसा प्रेमिल भाव कहीं ना।।

रामपाल प्रसाद सिंह 'अनजान'
मध्य विद्यालय दरवेभदौर
प्रखंड पंडारक पटना बिहार

शिक्षा की ज्योति

शिक्षक हैं शिक्षा के सागर,
ज्ञान के गागर हैं शिक्षक।
कुंभकार, सृजनहार और
भविष्य के निर्माता शिक्षक।
ज्ञान की दिव्य ज्योति जलाकर,
अंधकार से प्रकाश में लाते शिक्षक।
शिक्षक हैं शिक्षा के सागर,
ज्ञान के गागर हैं शिक्षक।
नवजात परिंदों को आसमान में,
उड़ना सिखाते शिक्षक।
बागों के नन्हें पौधों को सींचकर,
हरा-भरा पेड़ बनाते शिक्षक।
शिक्षक हैं शिक्षा के सागर,
ज्ञान के गागर हैं शिक्षक।
सिंधु में गोता लगाकर,
ज्ञान का मोती चुनवाते शिक्षक।
शून्य से शिखर तक पहुँचाते,
जीवन के सच्चे मार्ग दिखाते शिक्षक।
समर्पण भाव से लगन, कौशल,
जिज्ञासा उत्पन्न कराते शिक्षक।
सत्यनिष्ठ, कर्तव्यपरायण,
गरिमामय होते शिक्षक।
शिक्षक हैं शिक्षा के सागर,
ज्ञान के गागर हैं शिक्षक।
ज्ञान का अलख जगाते,
अच्छे संस्कार देते शिक्षक।
निष्ठा से शिक्षा देकर,
शिक्षणकर्ता कहलाते शिक्षक।

ब्यूटी कुमारी
मध्य विद्यालय मरांची
बछवारा, बेगूसराय

अपना हमें समर्पण दे दो

कूद कूदकर आते बच्चे।
कुछ सहमें इठलाते बच्चे।।
कहना चाह रहे कुछ बच्चे।
हो गए मौन फिर क्यों बच्चे।।
आशाओं के दीप जलाना।
हमको सच्ची राह दिखाना।।
गुरुवर हमको यह बतलाना।
इतना सब क्यों मुझे पढ़ाना।।
खेल खेलने हमको दे दो।
अवसर ऐसा सबको दे दो।।
नवल राह का दर्पण दे दो।
अपना हमें समर्पण दे दो।।
जब प्रयास गुरुवर का होता।
सीख खास है शिक्षा बोता।।
तिमिर भाव मन का है खोता।
बच्चा कोई कभी न रोता।।
हमें कृपा का पात्र बनाओ।
थोड़ा सा हीं सहज पढ़ाओ।।
आसमान की सैर कराओ।
मुझे विवेकानंद बनाओ।।

राम किशोर पाठक
प्राथमिक विद्यालय कालीगंज उत्तर टोला,
बिहटा, पटना, बिहार।

गुरुजन

गुरुजन होते हैं सदा,
जीवन की पतवार।
उनसे ही हम सीख कर,
रचते नव संसार।
रचते नव संसार,
समय पर खरे उतरते।
सीख बने वरदान,
पंथ निष्कंटक चलते।
कह राघव समझाय,
वही ज़न बनते सज्जन।
सुनें खोलकर कान,
बताते जो भी गुरुजन।

राघव दुबे
प्राथमिक विद्यालय लीलापुर, कैमूर

हे गुरु

हे गुरु स्वीकार करना इक नमन संस्कार रे मन,
जागने के फन का तू ही है मेरा आधार रे मन,
स्वर्ण आभा स्वर्ग सुख या हो जगत आधार रे मन ,
इन सभी के प्राप्ति का है तू सहज ही मार्ग रे मन।
हे गुरु स्वीकार करना इक नमन संस्कार रे मन।
मेरे बचपन की कहानी की गुरु मेरी माँ थीं रे मन,
प्रथम पूज्या हिय की अमृत थीं सहज अभिमान रे मन,
कुछ समझने और बतियाने की तोतली बात रे मन,
जग से परिचय स्वंय परिचित करने की शुरुआत रे मन,
आत्म-शक्ति मातृ-शक्ति श्रेष्ठ गुरु दिनमान रे मन।
हे गुरु स्वीकार करना इक नमन संस्कार रे मन।
मिट्टी के इस देह का मानव में था अवतार रे मन,
ज्यों मिले थे गुरु हमें मिलने लगा कुछ ज्ञान रे मन,
समय समृद्ध ज्ञान अमृत छुधा तृप्ति पान रे मन,
सहज सुंदर शब्द प्रतिपल गढ़ रहे नवमान रे मन।
हे गुरु स्वीकार करना इक नमन संस्कार रे मन।
दिन बीते , रात बीती बीत गए कई साल रे मन,
पल दो पल हर पल समर्पित था गुरु का ध्यान रे मन,
इस धरा पर ज्ञान रश्मि की सुधा रसपान रे मन,
हे गुरु शत शत नमन है हृदय आभार रे मन।
हे गुरु स्वीकार करना इक नमन संस्कार रे मन।

डॉ स्नेहलता द्विवेदी आर्या
उत्क्रमित कन्या मध्य विद्यालय शरीफगंज
कटिहार

जगत में गुरु से न कोई महान

ज्ञान है मिलता गुरु कृपा से ,
मिलता हर भय से त्राण।
वंदे तू गुरु की कीमत जान।
जगत में गुरु से न कोई महान ।।
गुरु ने पापों से हमें बचाया ,
गुरु ने मोहमाया से त्राण दिलाया।
वंदे तू गुरु की कीमत जान।
जगत में गुरु से न कोई महान ।।
कोई न गुरु के पार ही पाए ,
कोई न गुरु बिन ज्ञान कराए।
वंदे तू छोड़ सकल अभिमान।
जगत में गुरु से न कोई महान ।।
गुरु के बिना कभी नहीं मिलता ,
भटकन से भी त्राण।
जगत में गुरु देते पहचान।
जगत में गुरु से न कोई महान ।।
गुरु से शिक्षा गुरु से दीक्षा ,
नित देते वे सद्ज्ञान।
वंदे तू गुरु की कीमत जान।
जगत में गुरु से न कोई महान ।।

गुरु बसते सबके हृदय में ,
हर ज्ञान में उनकी शान।
वंदे तू गुरु की कीमत जान।
जगत में गुरु से न कोई महान ।।
गुरु की भक्ति , गुरु में निष्ठा ,
करते हैं सब ज्ञानी।
गुरु ही ज्ञान के सागर भी ,
ऐसा कहते नित ध्यानी।
वंदे तू गुरु की कीमत जान।
जगत में गुरु से न कोई महान ।।
माता पिता ने जन्म दिया
और दिया गुरु सद्ज्ञान।
धर्म , अर्थ , काम , मोक्ष जगत में ,
दिया इस पर भी विशद ज्ञान।
वंदे मत कर तू अभिमान।
जगत में गुरु से न कोई महान ।।
कहाँ पाप की रेखा जग में ,
कहाँ बहती पुण्य की धारा।
सद्गुरु के चिंतन मनन ने ,
हमें भवसागर पार उतारा।

वंदे तू कृपा गुरु की जान।
जगत में गुरु से न कोई महान॥
ईश्वर ने संसार बनाया,
हम सबको इसमें भरमाया।
गुरु ही इससे हमें बचाया,
देकर सतत सद्ज्ञान।
जगत में गुरु के बिना न ज्ञान।
जगत में गुरु से न कोई महान॥
चिंता में जब पड़े थे हम सब,
तब चिंतन की ज्योति जलाई।
अच्छे कर्मों की सीख दे
जग में पहचान कराई।
वंदे मत कर तू अभिमान।
जगत में गुरु से न कोई महान॥

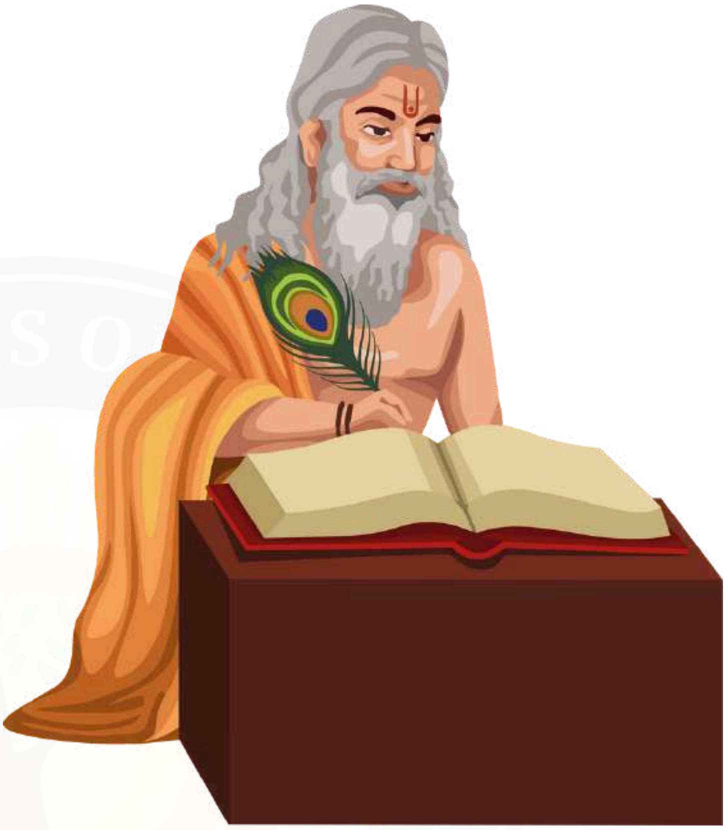

अमरनाथ त्रिवेदी
पूर्व प्रधानाध्यापक
उत्क्रमित उच्चतर माध्यमिक विद्यालय
बैंगरा

गुरु का गौरव

ज्ञान दीप की ज्योति जलाकर, तम को दूर भगाते हैं,
शिक्षा के उजियारे पथ पर, जीवन को सिखलाते हैं।
अंधकार जब छाए मन में, राह न कोई सूझे,
गुरु कृपा की एक किरण ही, हर बाधा को बूझे।
नैतिकता के नवल सुमन से, जीवन को महकाते,
कर्तव्य-धर्म निभाने वालों, को सच्ची राह दिखलाते।
सपनों को आधार मिले जब, आशा का संचार हो,
ऐसे शिक्षक चरण हमारे, श्रद्धा से सत्कार हो।
शिष्य हृदय में दीप प्रज्वलित, शिक्षक की पहचान,
सुरेश कहें यही, वंदन उनको, जो बनते हैं सम्मान।

सुरेश कुमार गौरव
उ. म. वि. रसलपुर, फतुहा,
पटना, बिहार

गुरुवर वाले प्रेम से

अवतार छंद गीतिका

झूम रहे सब संग में, कुछ आज कीजिए।
गुरुवर वाले प्रेम से, भर हृदय लीजिए।।
बच्चों का भी मन लगे, आ सके रोज हीं।
विद्यालय के रूप को, वह रंग दीजिए।।
कहते हैं अबोध सभी, बोध हम पा सकें।
ज्ञानवान सारे बनें, थोड़ा पसीजिए।।
करना है विकास अगर, नित हाथ थाम लें।
बुद्धि ज्ञान हित आपसी, दोष रस पीजिए।।
मंजिल मिल जाए सहज, राह आसान हो।
भरना है अरमान को, वह शान से जिए।।
अभिभावक से मिल सदा, खबर लेते रहें।
बच्चे विद्यालय अभी, आज से भेजिए।।
अनपढ़ होना कलंक यही, बात समझा सकें।
पढ़ें बिना जीवन कभी, हो नहीं ताजिए।।
पाठ पढ़ाए प्रेम का, समझ इंसान का।
शिक्षा का प्रसार करें, सुर ताल साजिए।।
रिश्ता हो परिवार सा, स्वच्छ पहचान हो।
हाव भाव भाषा लिए, चित में विराजिए।।
सार्थक प्रयास आपका, भरता उमंग है।
होगा अब विकास यहाँ, मन मुग्ध गाजिए।।

राम किशोर पाठक
प्राथमिक विद्यालय कालीगंज उत्तर टोला,
बिहटा, पटना, बिहार।

गुरु

अज्ञानता के गहन तिमिर से,
ज्ञान के प्रकाश की ओर ले जाए।
मन के भीतर के तमस मिटाकर,
रोशनी चारों ओर पहुँचाए।
गुरू के दिये ज्ञान से हमारा
जीवन सफल सदा ही कहलाये।
मार्गदर्शक बन जो सही राह दिखलाते,
जीवन पाठशाला में सबक सिखलाते,
सही गलत का अंतर जो हम समझें
गुरू के ज्ञान से हम वो समझ पाते हैं
गुरू बिना जीवन निरर्थक लगे,
गुरु ही निराशा में आशा का संचार करवाएं।

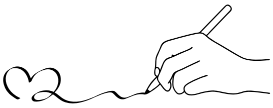

रूचिका
राजकीय उत्क्रमित मध्य विद्यालय तेनुआ
गुठनी, सिवान

वंदन गुरु का करते सारे

अंजनेय छंद गीत

गुरुवर तेरे वैभव न्यारे।
वंदन गुरु का करते सारे।।
जो जन शरण तुम्हारी आते।
पीड़ा मन की सहज भगाते।।
सबको वर दे तुमने तारे।
वंदन गुरु का करते सारे।।०१।।

ज्ञान चक्षु को हम-सब पाते।
बुद्धि ज्ञान हमको उपजाते।।
भरते जीवन में उजियारे।
वंदन गुरु का करते सारे।।०२।।

भँवर जाल में फँसे हुए हैं।
दुविधा में हम पड़े हुए हैं।।
हरपल माया के हम मारे।
वंदन गुरु का करते सारे।।०३।।

नहीं बिना गुरु मान मिलेगा।
सहज सत्य का ज्ञान मिलेगा।।
जिससे लगते सभी किनारे।
वंदन गुरु का करते सारे।।०४।।

बोध ब्रह्म का गुरुवर देते।
सब संताप शोक हर लेते।।
भव की तरिणी पार उतारे।
वंदन गुरु का करते सारे।।०५।।

राम किशोर पाठक
प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया इंगलिश,
पालीगंज, पटना, बिहार।

गुरु पूर्णिमा

पावन दिन है आज का , जन्म लिए ऋषि व्यास।
तीन लोक नौ खंड में , मानो हुआ उजास।।
वेदों की रचना किये, लिखे जगत का सार।
कहती श्रीमद्भागवत, गुरु हैं अगम अपार।।
हरि लाते हैं जीव को, जन्म मरण के द्वार।
गुरु अनुकंपा एक दिन, करते हैं भवपार।।
गुरु सुमिरन कर रे मना, गुरु हीं का ले नाम।
हर विपदा में सुन सदा , गुरु आयेंगे काम।।
गुरु हैं देवों से बड़े, वेद कहे ये जान।
इधर उधर को छोड़कर, कहना गुरु की मान।।
पावन है गुरु पूर्णिमा, उत्तम मास अषाढ़।
गुरु चरणों में भक्त का, उपजें प्रेम प्रगाढ़।।
मनु कर नित गुरु वंदना, गुरु ही ज्ञान प्रमाण।
गुरु कृपा से एक दिन, होगा सुन कल्याण।।

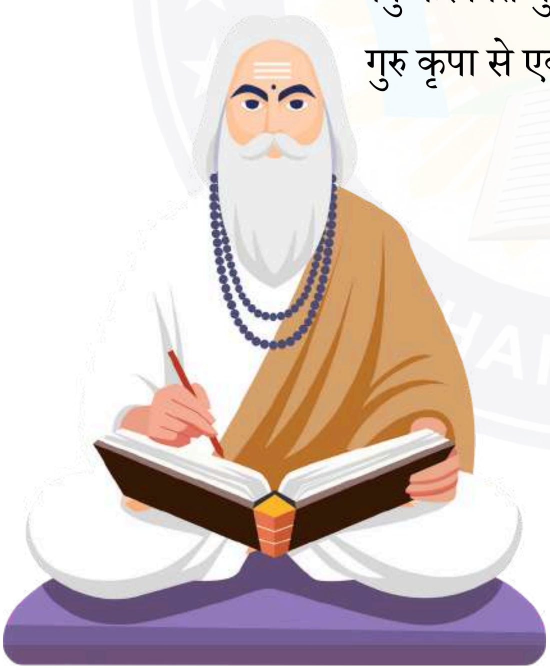

मनु कुमारी
विशिष्ट शिक्षिका, प्राथमिक विद्यालय दीपनगर, बिचारी, राघोपुर
सुपौल ,बिहार

हम सुंदर भविष्य बनाएँ

जहाँ कहीं भी सीख अच्छे मिलते हों ,
उसे जरूर अपनाएँ।
अपने भारत देश को हम ,
आसमाँ तक पहुंचाएँ।
शिक्षित होना बहुत जरूरी ,
यह मानव की पहचान है।
खेल खेल में शिक्षा लेना ,
हम बच्चों की शान है।
यह देश नहीं है तेरा मेरा ,
यह देश है हम सबका।
हम सब हैं भारत की जान,
सबका इससे भाग्य चमका।
हम लक्ष्य चुनें अच्छे अच्छे ,
हम बच्चे हैं बिल्कुल सच्चे।
भारत की शान बढ़ाने में ,
हम बच्चे हैं बड़े अच्छे।

खेलकूद भी बुरा नहीं ,
नाम पा सकते हैं शीर्ष इसमें।
शान इसमें भी है भारत का ,
काम कर सकते हैं अच्छा जिसमें।
हम खेलें कूदें और पढ़ें लिखें ,
साथ साथ भी यह चल सकता है।
परन्तु पहले शिक्षा बहुत जरूरी ,
इससे किस्मत भी बन सकता है।
रास्ते जो भी अच्छे हों ,
पर हम शीर्ष लक्ष्य का ध्यान रखें।
जीवन की सुमन वेला में ,
भारत की शान का मान रखें॥

अमरनाथ त्रिवेदी
पूर्व प्रधानाध्यापक
उत्क्रमित उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बैंगरा
प्रखंड बंदरा , जिला मुजफ्फरपुर

गुरु का सानिध्य

चलते हैं गाँवों की छाँह में,
है कलम मसिदानी साथ में।
रहते हैं लोग जहाँ अंधेरे में,
हर्ष वहाँ ज्ञान दीप जलाने में।
पढ़ती है अपनी बेटियाँ भी,
काटी है घुटन की बेडियाँ भी,
रहते हैं तैयार गुरुजन भी,
कर समर्पित अपना मन भी।
चूमे गगन और पहुँचे सरहद पार,
सफलता पाओ तुम सब बारंबार,
आशावान देश तुम नौनिहालों से,
मिले आशीष गुरु के सानिध्य से।

एस. के. पूनम
प्राथमिक विद्यालय बेलदारी टोला, फुलवारीशरीफ

गुरु पूर्णिमा

जन्म दिवस गुरु व्यास के, चरण कमल प्रणिपात।
जिनके शुभ आशीष से, जीवन हो अवदात।।

गुरु उत्सव की पूर्णिमा, लाएँ नव संकल्प,
श्रद्धायुत विश्वास का, कभी नहीं हो अल्प।।

कुंभकार सादृश्य गुरु, देते ज्ञान अमोल।
गुरु की महिमा है बड़ी, सके न कोई तोल।।

गुरुवर पारस की तरह, लेते शिष्य तराश।
गहन तिमिर को दूर कर, काटें नित भव पाश।।

करें धवल मन गुरु शरण, पाएँ शुचिता ज्ञान।
अमल विमल मति सर्वदा, देती है सम्मान।।

गुरु ही भव से तारकर, करते हैं उद्धार।
ऐसे गुरुवर को सदा, नमन सैकड़ों बार।।

मात पिता गुरु का सदा, करिए नित सम्मान।
तीनों के आशीष से, जीवन बने महान।।

गुरु चरणों में है जिसे, श्रद्धायुत विश्वास।
जीवन में पाता वही, सन्मति बुद्धि विकास।।

ईश तुल्य गुरुवर सदा, वेदों की पहचान।
सत शिव सुंदर भाव का, रखते हरपल ध्यान।।

बच्चे कोमल भाव के, बनें नेह संबंध।
गुरुजन के आशीष से, फैले ज्ञान-सुगंध।।

देवकांत मिश्र 'दिव्य'
मध्य विद्यालय धवलपुरा, सुलतानगंज,
भागलपुर, बिहार

गुरु पूर्णिमा

गुरु पूर्णिमा पर गुरु को है
शत् -शत् बार प्रणाम,
जबतक सूरज चाँद रहेगा
अमर रहेगा गुरु का नाम।
गुरु बिन ज्ञान न मिले
गुरु बिन मिटे न अंधकार,
गुरु बिन चौरासी लाख योनियों में
भटकै बारंबार।
पुस्तक रखा स्कूल में
कैसे पढ़े अपने आप,
जबतक गुरु न पढाएँगे
तबतक मिटे न अज्ञान का शाप।
गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु हैं
गुरु हैं देव महेश,
तैंतीस करोड़ देव में
गुरु हीं सबसे श्रेष्ठ।
सभी देवगण गुरु किए
जो न किए गुरु वो रोय,
जो गुरु किए उनको मोक्ष मिला
बिन गुरु वाले नरक में रोय।
गुरु और शिष्य की परंपरा
सदियों से चली आय,
जैसे Q के पास U
वैसे गुरु में है शिष्य समाय।
गुरु नाम है ज्ञान का
शिष्य सीख ले सोई,
ज्ञान मरजाद जाने बिना
गुरु और शिष्य न कोय।
गुरु की महिमा की बखान
कर सके न कोय ,
जो गुरु महिमा को जान गयो
वे हीं गुरु होय।
प्रथम गुरु हैं माता -पिता
रज -विरज के सोई दाता,
दोसर गुरु हैं मन की धाई
गिरह बास की बंदी छोड़ाई।

तेसर गुरु हैं धरिया नामा
लेले नाम पुकारे गामा,
चौथा गुरु जो शिक्षा दीन्हा
रज व्यवहार तबे सब चीन्हा।
पाँचम गुरु जो वैश्नव कीन्हा
राम नाम का सुमिरन दीन्हा,
छठा गुरु जो भरम गढ़ तोरा
दुबिधा मेटी एक से जोड़ा।
कबीर सात गुरु संसार में
सेवक सब संसार,
सतगुरु सोई जानिए
जो भव जल उतारै पार।

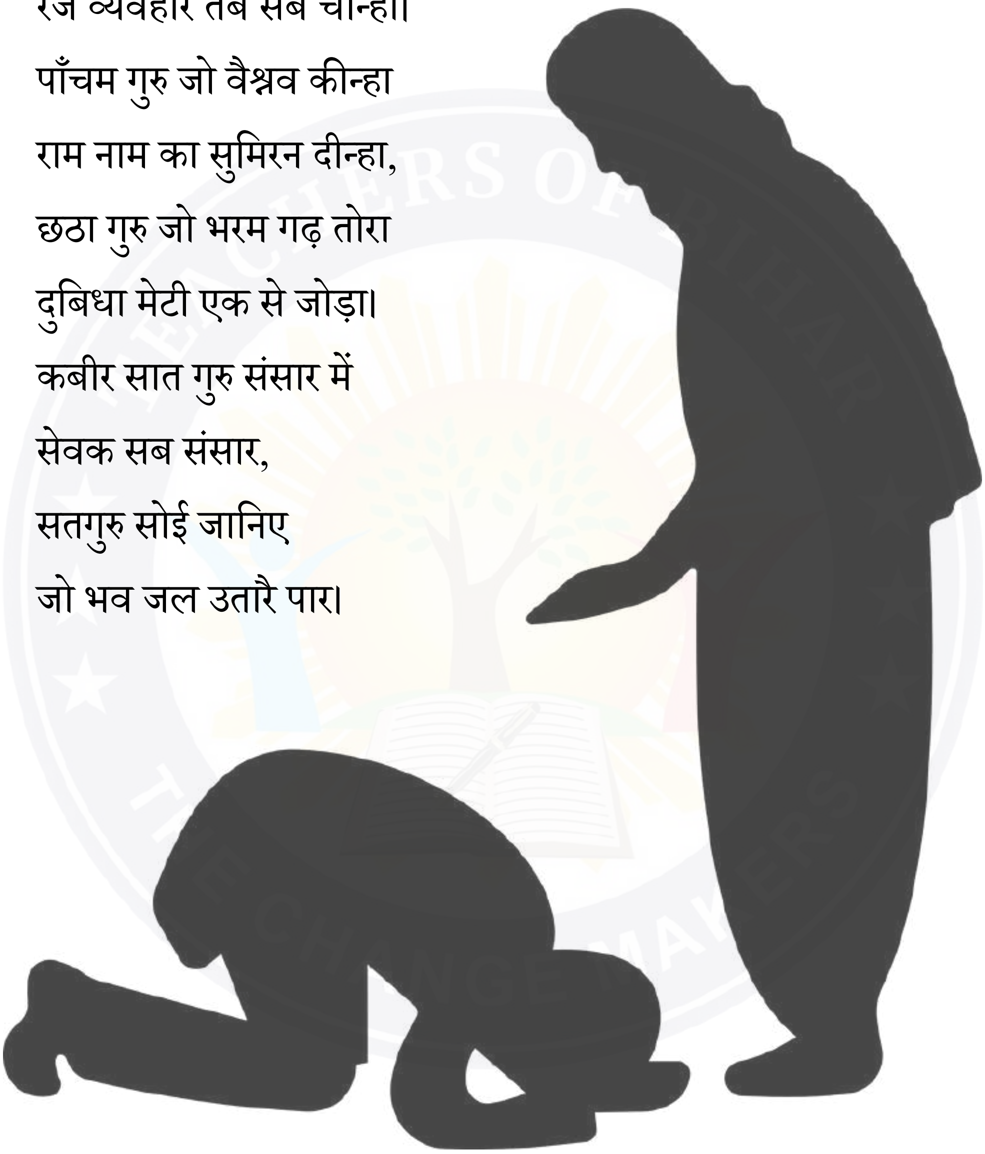

नीतू रानी
पूर्णियाँ बिहार

हे गुरुदेव

अज्ञानरूपी तिमिर दूर कर हम
ज्ञान की अलौकिक रश्मि फैलाएं,
आइए हमसभी मिलकर फिर
दिव्यज्ञान की एक दीप जलाएं।
गुरु के ऋण को कहाँ कोई चुका पाया है
गुरु अंधकूप से निकाल,हमें प्रकाश में लाया है,
काम,क्रोध,लोभ,मोह,मद के बंधन से
गुरु ने ही अपने ज्ञानज्योत से छुड़ाया है।
शिक्षक राष्ट्र निर्माता है
प्रज्ञावान हमें बनाते हैं,
हमें प्रकाश देकर वो खुद
मोमबत्ती सा जल जाते हैं।
हमारी गलती को करके क्षमा
हृदय में रखते हैं करुणा और दया
सत्कर्म के मार्ग पर चलना सिखाए
भूले,भटके को राह दिखाएं।
आइए अंधेरे को मिटाने के लिए
हम मिलकर ज्ञान की दीप जलाएं।

संजय कुमार
इंटरस्तरीय गणपत सिंह उच्च
विद्यालय,कहलगाँव
भागलपुर,(बिहार)

गुरु की महिमा

जगत के जीव सारे,
राजा हों या रंक प्यारे,
जगत में गुरु बिना,
ज्ञान कौन पाता है?
गुरु सम महादानी,
दुनिया में नहीं सानी,
जड़ में भी ज्ञान भर,
महान बनाता है।
नर हो या नारायण,
चाहे भक्ति परायण,
गुरु जड़ चेतन के ,
भाग्य का विधाता है।
राम कृष्ण बुद्ध आए,
भगवान कहलाए,
“रवि” बिना गुरु कौन,
ईश बन पाता है?

जैनेन्द्र प्रसाद रवि’
मध्य विद्यालय बख्तियारपुर,
(पटना)

गुरु महिमा

गुरु महिमा अनंत लखे जेहिं आदि अंत,
माता शारदा के संग वेद जो कहाते हैं।
नरतन रूप धरे सगुण साकार किये,
धरम उत्थान हेतु आप चले आते हैं।
करूणा दया के साथ करते जो सदाचार,
ब्रह्म को बताते और ब्रह्म में रमाते हैं।
अज्ञान तिमिर हरे ज्ञान का प्रकाश भरे,
शिष्य अंत:करण को उज्ज्वल कराते हैं।
ज्ञान और देते ध्यान समता सुबुद्दि जान,
मोक्ष मार्ग जाने की भी युक्ति बन आते हैं।
हरि हर विधि भजे मनसा अहं ज्यों तजे,
सत्संग में जाके निज शीश वो नवाते हैं।
जो भी मांगो सब देते कभी कुछ नहीं लेते,
सुमति को देने वाले कुमति नशाते हैं।
गुरु गुण गावे जोई आज्ञा मानि ध्यावै सोई,
"मनु" कहे निश्चय वो ईश लख पाते हैं।

मनु कुमारी
पूर्णियाँ, बिहार

गुरु माना है हम आपको

जीवन तो समंदर की लहरों में रहता था,
और मैं कश्ती लिए किनारे किनारे बहता था।
बस सुनता था कही मीन है तो कही सर्प भी,
पर अपनी आँखों से कुछ भी नही देखा था।
गुरु बिना कोई एक निशाना भी कैसे भेद सके,
बिना नेत्र के चाहे भी तो मंजर कैसे देख सके
आँखों पर पट्टी थी, जैसे अंधकार की दुनिया थी,
पर गुरु आपके पास तो कोई चमत्कार की पुड़िया थी।
चमत्कारी हो, मायावी हो कोई महाज्ञानी इंसान भी हो,
निर्जीव को सजीव बना दे, आप ऐसे भगवान भी हो।
जो भीतर का रूप दिखाए आपने ऐसा दर्पण दिया,
मुझको ज्ञान नही दिया केवल, एक नया जीवन दिया
आत्मविश्वास ऐसा भरा आपने की, देखने वाला सोचेगा
कोई पर्वत भी नीचे आ जाए तो कितनी देर रास्ता रोकेगा
हर बाधा को हर दुविधा को मैने ऐसे पार किया,
जैसे हर मुश्किल ने खुद हल होने का उपचार दिया
और रिश्ते तो कितने गिनवाऊँ, आपने जो निभाया है,
की संगी साथी को छोड़ो माँ बाप को भी भुलाया है

अक्सर प्यार से तो कभी गुस्से से समझाया है।
अब उसी राह पर चलना है, जो राह आपने दिखाया है
बहुत वक्त लगाया आपको ये गीत समर्पित करने में,
पर वक्त तो लगना ही था उतना फ़न अर्जित करने में
मैं एहसान भुला जाऊँ ऐसा कोई क्षण नही,
या एहसान जता पाऊँ इतना भी सक्षम नहीं।
पर अँगूठा क्या पूरा शरीर त्याग कर दूँगा,
गुरु माना है हम आपको, मैं एकलव्य से कम नहीं।

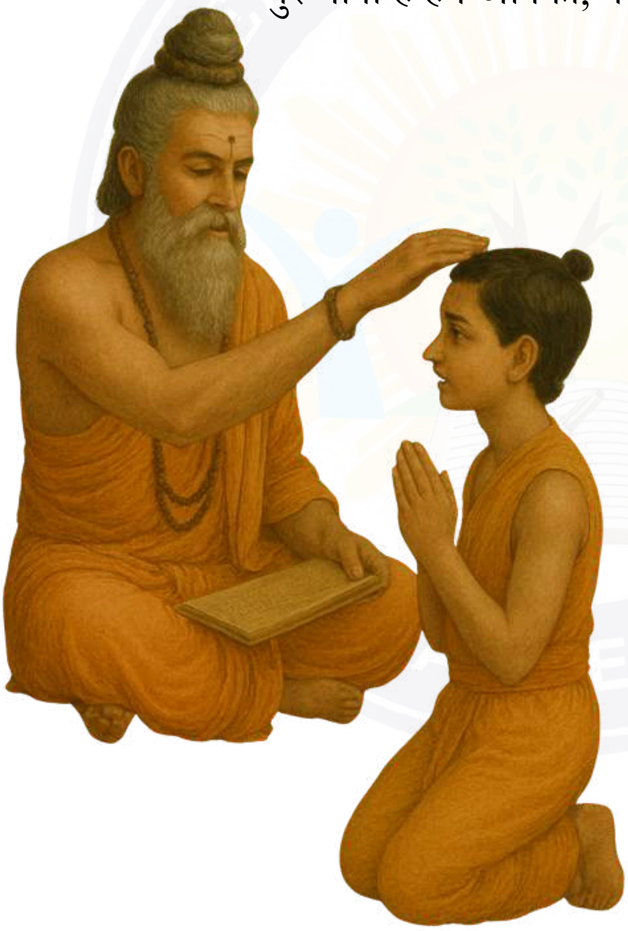

अभिनव कुमार
प्रखंड शिक्षक, रोसरा,
समस्तीपुर

गुरु वन्दना

हम हैं कोरे कागज़-सा, आप कलमकार हो गुरुवर।
हम तो लिखते गीत हैं, आप सजाते सुर- ताल हो गुरुवर॥
हम तो हैं नौसिखिये परिंदें, लड़खड़ाते बार- बार हैं गुरुवर।
आप तो हमें उड़ना सिखाते, बनाते हमें बाज हो गुरुवर॥
हम जमीं पर गिरे बीज-सा, सींचते हमें तो आप हो गुरुवर।
हम तो हैं नवकोपल-सा, तरुवर बनाते आप हो गुरुवर॥
हम तो बिखरे मोती-सा चुन-चुन कर लाते आप हो गुरुवर।
संजोकर हमारे सपनों को, पिरोकर माला बनाते आप हो गुरुवर॥
हम तो हैं छोटी सी कश्ती, तूफ़ानों से घबरा जाते हैं।
आप तो हो कश्ती के मांझी, तुफां से लड़ना सिखाते गुरुवर॥
हम तो हैं मासूम कली-सा, जिसे तोड़ सके हर कोई गुरुवर।
आप तो हो माली बगिया के, हमें टूटने से बचाते गुरुवर॥
हम तो हैं उड़ते पतंग-सा, गगन चूमना चाहते गुरुवर।
आप थामे हो मांझा डोर, गगन की सैर कराते गुरुवर॥
आप जलाते ज्ञान का दीप, ज्ञान का प्रकाश फैलाते गुरुवर।
अच्छाई का मार्ग दिखाते, दुनियाँ बदलने की आवाज हो गुरुवर॥
करते हम आपका वंदन, आपके चरणों का धूल भी चंदन।
आप हो परम् पूज्य परमेश्वर, हम नमन में शीश नवाते गुरुवर॥

स्वाति सौरभ

आदर्श मध्य विद्यालय मीरगंज,

आरा नगर भोजपुर

गुरुवर तुझे नमन

न आपसा है कोई श्रेष्ठ,
करते हैं हम आपका सम्मान।
धन्य हो जाता हमारा जीवन,
पाकर आपसे ज्ञान।
है नमन तुझे हे गुरुवर।
आप हीं हो राष्ट्र का स्तंभ,
बिन आपके न हमारा आधार।
करते हमारा चरित्र निर्माण,
दूर करते सारे विकार।
है नमन तुझे ————।
जहाँ सजते हम जैसे पुष्प,
आप हो उस बगिया के माली।
न हमारा है कोई रूप रंग,
आप हीं से मिलता हमें स्वरूप।
है नमन तुझे ————।

आपकी है एक विशिष्ट पहचान,
आप हीं हो ज्ञान का सागर।
भविष्य हमारा उज्ज्वल करते,
हमें शिक्षा का पाठ पढ़ाकर।
है नमन तुझे ————-।
जीवन निर्वाह का असली तरीका,
आप हीं तो सिखलाते गुरुवर।
उचित मार्ग पर ले जाते हमको,
जीवन की दशा-दिशा बदलकर।
है नमन तुझे————।
करना आपको परिभाषित,
है इतना भी सरल नहीँ।
आपके गुणों का खान बताकर भी,
रह जाते हैं शेष शब्द कहीं।
है नमन तुझे, हे गुरुवर।

लवली वर्मा
प्राथमिक विद्यालय छोटकीरटनी
हसनगंज, कटिहार

जगत में गुरु कहलाता है

गुरु की महिमा होती है अपरंपार
इससे तुम नहीं कर सकते इनकार
जिसके प्रकाश से अंधकार खत्म हो जाता है
वही तो है जो इस जगत का गुरु कहलाता है।
गुरु की महत्ता को प्यारे तुम लो पहचान
इन्हीं के चलते हैं जग में तेरा मान सम्मान
जिसके तेज़ से भय खत्म हो जाता है
वही तो इस जगत में गुरु कहलाता है ।
गुरु की कर ले तू सेवा सत्कार
गुरु की कृपा से होगी बेड़ा पार
जिसके स्पर्श से ही हर पीड़ा दूर हो जाता है
वही तो है जो इस जगत का गुरु कहलाता है।
माता पिता ने तुझे जन्म दिया
भगवान ने है तेरा कर्म लिखा
हैं ईश्वर भी, जो इसकी पहचान कराता है
वही तो है जो इस जगत का गुरु कहलाता है।
आओ हम सब करें गुरु की पूजा अर्चना
जिससे पूरी होगी हमारी हर मनोकामना
जो घर-घर जाकर शिक्षा का अलख जगाता है
वही तो है जो इस जगत का गुरु कहलाता है।

एम० एस० हुसैन
उत्क्रमित मध्य विद्यालय
छोटका कटरा
मोहनियां कैमूर

पद्यपंकज

आपके द्वारा दिया गया अमूल्य समय हमारे लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। यदि आपके पास कोई सुझाव हो, तो कृपया हमें अवगत कराएं, जिससे हम और भी बेहतर कार्य कर सकें।

Teachers Of Bihar

क्या आप बिहार के सरकारी विद्यालय के शिक्षक हैं ? आपको अपनी रचना भी प्रकाशित करनी है ? नीचे दिए गए वेबसाइट, ईमेल एवं व्हाट्सप्प के माध्यम से जुड़े |

writers.teachersofbihar@gmail.com

padyapankaj.teachersofbihar.org

+91 7250818080 | +91 9650233010

पद्यपंकज के सभी अंकों को पढ़ने के लिए QR Code को स्कैन करें

Reg. No. BR/2025/0487469